

महिला स्वास्थ्य देखभाल में हरित नवाचार, आवश्यकता और चुनौतियां (Green innovation in women's healthcare, need and challenges)

By पूनम रौतेला

परिचय:

व्याकरण की रचना करने वालों ने.....

नाजुक "पंखुड़ियों" को स्त्रीलिंग कहा।।

और "नुकीले कांटों" को पुल्लिंग।।

पानी जब मीठा रहा तो "नदी" स्त्रीलिंग...

पानी खारा हो गया तो "समंदर" पुल्लिंग....

युद्ध होता है.... पर शांति आती है ॥

हवा चलती है.... तूफान आता है।।

व्याकरण की रचना करने वालों ने....

हर उस चीज को जिसमें नाजुकता देखी

उसे स्त्रीत्व से जोड़ा....

और फिर

उसके संरक्षण की जिम्मेदारी सौंप दी समाज को....

और फिर उसी समाज ने इसी संरक्षण के लिए आधी आबादी को कैद कर दिया बंधनों में.....



इसी आधी आबादी को अनावश्यक बंधनों में बांधकर विश्व विकास के रथ पर चढ़कर बेलगाम होकर दौड़ना चाहता है। इस दौड़ से दुनिया को कोई मंज़िल हासिल नहीं होगी, यदि आधी आबादी यानी महिलाओं की सहभागिता ना हो।

पूरी दुनिया विज्ञान और तकनीक को जीवन का पर्याय मान चुकी है, मानव सभ्यता परिवर्तन के शिखर पर है, और मानव की नैसर्गिक बुद्धि से उपजी आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस यानी "एआई" मानव को ही चुनौती दे रही है। ऐसे में प्रकृति के साथ मानव का संतुलित बंधन कमजोर हो रहा है और प्राकृतिक आपदाएं हमें लगातार चेतावनी दे रही हैं।

इस समस्या के मूल में विकास और तकनीकी क्रांति की वह चाहत है जिसमें दया, करुणा, और सहअस्तित्व की स्त्रीपरक भावनाओं को सिरे से अनदेखा किया गया है। प्रकृति असंतुलित हुई है और इसीलिए संतुलन स्थापित करने के लिए देश की आधी आबादी यानी महिलाओं की स्वस्थ भागीदारी की दिशा में आगे बढ़ने की जरूरत गहराई से महसूस की जा रही है।

महिलाएं वैश्विक पटल पर परिवर्तन के सबसे ताकतवर स्तंभों में से हैं और जब बात प्रकृति के साथ सामंजस्य की हो तो उनकी प्रतिभा और सामर्थ्य का कोई मुकाबला नहीं। इसलिए उनका शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य सुनिश्चित करना वैश्विक जिम्मेदारी है। और इसके लिए उपयोग में लाई जाने वाली सुविधाओं और उत्पादों का पर्यावरण की सुरक्षा के लिए सकारात्मक होना भी जरूरी है।

महिला स्वास्थ्य में हरित नवाचार का आधार यही से जुड़ा है। स्त्री स्वयं प्रकृति का स्वरूप है, वैश्विक जीवनचर्या में पुरुषों के साथ बराबर की भागीदार है और जीवन की उत्पत्ति में स्त्री का जननी के रूप में एकाधिकार है, इसीलिए स्त्री की स्वास्थ्य समस्याओं का निदान प्रकृति के साथ सामंजस्य और संरक्षण पर आधारित होना चाहिए, यही "हरित नवाचार" है!!

विस्तृत समीक्षा:

(१) पारिभाषिक अर्थ: महिला स्वास्थ्य में हरित नवाचार का अर्थ है ऐसी चिकित्सा के उपाय और समाधानों को विकसित करने पर जोर देना जो महिलाओं के स्वास्थ्य को सुधारने के साथ-साथ पर्यावरण के अनुकूल टिकाऊ और ऊर्जा संरक्षण के अनुरूप हो और पारिस्थितिकी तंत्र की सुरक्षा भी सुनिश्चित करते हों।

(२) उद्देश्य और आवश्यकता: महिलाएं मानव सभ्यता में जननी होने के नाते सबसे सम्मानित और महत्वपूर्ण पद पर सृष्टि के प्रारंभ से ही प्रतिष्ठित हैं। एक मां के रूप में वे न सिर्फ शिशु को जन्म देती हैं, बल्कि उसे पालित-पोषित कर योग्य नागरिक भी बनाती हैं। इसके अतिरिक्त, वे कामकाजी महिलाओं के रूप में घर, समाज, और देश के आर्थिक विकास में सहभागी बनती हैं, घरेलू जिम्मेदारियां का निर्वहन भी लगातार करती हैं। इन कर्तव्यों के अनवरत निर्वहन में उनका स्वास्थ्य भारी कीमत चुकाता है और अक्सर लापरवाही के कारण वे गंभीर स्वास्थ्य चुनौतियों का सामना भी करती हैं।

ऐसे में उनके स्वास्थ्य की समय पर देखभाल और उपचार जरूरी है और वह भी प्रकृति सम्मत, क्योंकि कई परंपरागत स्वास्थ्य सुविधाएं और बुनियादी सुविधाएं उनके लिए हानिकारक सिद्ध हो चुकी हैं:

मासिक धर्म: पारंपरिक सेनेटरी पैड में प्लास्टिक और हानिकारक रसायन होने के कारण वे त्वचा में संक्रमण, त्वचा पर चकत्ते और एलर्जी पैदा करते हैं, साथ ही इन्हें उपयोग के बाद विघटित होने में वर्षों लगते हैं, जो गंभीर पर्यावरण प्रदूषण का कारक है।

घर के भीतर वायु प्रदूषण: विश्व के कई भागों में आज भी महिलाएं खाना पकाने के लिए लकड़ी, कोयला या उपलों का उपयोग करती हैं जिनका धुआं फेफड़ों की बीमारियां, दमा और नेत्र समस्याओं को जन्म देता है।

पेयजल: ग्रामीण क्षेत्रों में परिवार के लिए जलापूर्ति अक्सर महिलाओं के हिस्से में आती है और सबसे पहले प्रदूषित पेयजल से होने वाली बीमारियां भी उन्हीं को प्रभावित करती हैं, जिसमें अतिसार या दस्त, अथवा टाइफाइड या मोतीझरा मुख्य हैं।

रसायन आधारित कृषि: खेती, किसानों और मजदूरों से जुड़ी महिलाएं सीधे कीटनाशक और रसायनों के संपर्क में आती हैं और हार्मोन असंतुलन के कारण उनकी गर्भावस्था में जटिलताएं तक पैदा हो जाती हैं।

जलवायु परिवर्तन: जलवायु परिवर्तन के कारण आने वाली प्राकृतिक आपदाओं और अत्यधिक गर्मी का सबसे बड़ा असर गर्भवती महिलाओं और शिशुओं के स्वास्थ्य पर पड़ता है, जो गंभीर समस्या है।

उपरोक्त कारणों से महिलाओं के स्वास्थ्य पर न सिर्फ ध्यान देना जरूरी है बल्कि ऐसे उपाय भी आवश्यक हैं जो प्रकृति के साथ समन्वय कर उन्हें सुरक्षित रख सकें।

(३) प्रमुख हरित नवाचार और परिवर्तन की दिशा:

रीसायकल होने योग्य उत्पाद: पारंपरिक सेनेटरी पैड के स्थान पर बायोडिग्रेडेबल पैड्स, मासिक धर्म कप और पुनः प्रयोज्य अधोवस्त्र, पर्यावरण प्रदूषण को कम करते हैं और महिला स्वास्थ्य के लिए बेहद लाभदायक हैं।

सुरक्षित पेयजल: सौर ऊर्जा से चलने वाले जल शोधन संयंत्र और इको फ्रेंडली शौचालय, महिलाओं को जल जनित बीमारियों से बचाने की दिशा में सफल हरित नवाचार हैं।

जैविक खेती: हरित कीटनाशकों और प्राकृतिक खाद के उपयोग से महिलाओं का स्वास्थ्य खतरनाक रसायनों से सुरक्षित रहता है।

ई-हेल्थ सेवाएं और टेली-मेडिसिन: घर बैठे डिजिटल परामर्श और दवाइयों की उपलब्धता होने से महिलाओं को बार-बार अस्पताल जाने की जरूरत नहीं होती, जिससे कार्बन उत्सर्जन में कमी आती है और समय पर स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध होती हैं।

ग्रीन इंफ्रास्ट्रक्चर: आधुनिक तकनीक का उपयोग कर बनाए जाने वाले ग्रीन इंफ्रास्ट्रक्चर पर्यावरण को संतुलित रखकर तापमान नियंत्रित करते हैं और महिलाओं के मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाले कुप्रभाव को समाप्त करते हैं।

उपरोक्त हरित नवाचारों से वैश्विक स्तर पर महिलाओं के बिगड़ते स्वास्थ्य और मृत्यु दर के आंकड़ों में सकारात्मक परिवर्तन की दिशा तय की जा सकती है, जो हरित नवाचार का सबसे बड़ा लाभ है।

(४) विश्व स्तरीय प्रयास: महिला स्वास्थ्य और हरित नवाचार का मेल आज के समय में एक बड़ा वैश्विक ट्रेंड बन चुका है और कई विश्व स्तरीय प्रतिष्ठित कंपनियां इस दिशा में बेहतरीन कार्य कर रही हैं:

नेचुरल साइकिल्स: यह कंपनी बिना किसी हार्मोनल दवा या प्लास्टिक आधारित उपकरण के केवल शरीर के तापमान को ट्रैक कर प्राकृतिक रूप से गर्भधारण को नियंत्रित करने में मदद करती है जो पर्यावरण अनुकूल गर्मी रोधी विकल्प है और महिलाओं के लिए श्रेष्ठ है।

बायोमिल्क: यह कंपनी पारंपरिक शिशु मिल्क फार्मूला बनाने के लिए मानव स्तन कोशिकाओं से असली दूध तैयार करने पर कार्य कर रही है ताकि स्तनपान न करवा पाने वाली महिलाओं को लाभ मिल सके।

दिवाकप/मून कप: इन कंपनियों ने मेडिकल ग्रेड सिलिकॉन से बने रीयूजेबल मेंस्ट्रुअल कप और मासिक धर्म के लिए धोने योग्य कपड़े बनाए हैं जो कई साल तक चलते हैं और अरबों टन प्लास्टिक कचरा बचाते हैं।

गेट्स फाउंडेशन: बिल गेट्स और मेलिंडा गेट्स की साझा फाउंडेशन ने हरित नवाचार की दिशा में सबसे अधिक आधारभूत कार्य किए हैं। यह फाउंडेशन वैश्विक स्तर पर जलवायु परिवर्तन से महिलाओं के स्वास्थ्य की रक्षा पर नवाचारों में निवेश करती है, स्वयं सहायता समूह से महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण को फंड देती है, एशिया और अफ्रीका की महिला किसानों के लिए हरित कृषि उपकरणों और प्राकृतिक खेती के विकास में भी पैसा लगाती है। फाउंडेशन ने इस दिशा में २.५ अरब डॉलर देने की घोषणा की है, जो हरित नवाचार की दिशा में क्रांतिकारी कदम है।

(५) भारत में पहल:

क्रिस्टीन कागेतसु के साथी पैड्स: क्रिस्टीन ने भारत में, केले के रेशे से १००% बायोडिग्रेडेबल सैनिटरी पैड्स बनाने की पहल की है जो महिला स्वास्थ्य के लिए बेहतरीन पहल है।

सुजाता सावंत का अवनी वैलनेस: सुजाता ने मासिक धर्म को स्वच्छ और सुरक्षित बनाने के लिए ऑर्गेनिक कॉटन और पुनः उपयोग किए जाने वाले कपड़ा पैड बनाने शुरू किए हैं।

तन्वी जोहरी का कार्मेशी: तन्वी के मकई के स्टार्च और बांस के रेशों से तैयार सैनिटरी पैड त्वचा के अनुकूल हैं और बायोडिग्रेडेबल होने से पर्यावरण के लिए सुरक्षित भी हैं।

इकोफेन: अरुंधति मुरलीधरन और उनकी टीम ने ग्रामीण महिलाओं को कम कीमत पर कपड़ों के सैनिटरी पैड्स उपलब्ध कराने और स्वच्छता के प्रति जागरूक रहने का हरित आंदोलन चलाया है।

हेल्थफैब: वर्ष २०२० में स्थापित इस अग्रणी भारतीय कंपनी ने भारत में ७३०० करोड़ रुपये मूल्य के भारतीय महिला स्वच्छता बाजार में प्रवेश किया और इन्ट्रोवेटिव पीरियड पैटीज बनाकर हरित नवाचार के क्षेत्र में क्रांति ला दी है जो महिला स्वास्थ्य की दिशा में अभूतपूर्व है।

(६) चुनौतियां: हरित नवाचार महिलाओं के स्वास्थ्य को बेहतर बनाने की दिशा में सबसे सराहनीय पहल है लेकिन इसकी राह में चुनौतियां भी कम नहीं हैं:

जागरूकता की कमी: ग्रामीण और विकासशील क्षेत्रों में आज भी पर्यावरण अनुकूल उत्पादों की पहुंच सीमित है क्योंकि वहां इसकी जानकारी और इस विषय में जागरूकता का अत्यधिक आभाव है।

हरित उत्पादों की कीमत और पहुंच: पारंपरिक उत्पादों से थोड़ा महंगा होने के कारण हर वर्ग की महिलाएं इन्हें नहीं खरीद पाती साथ ही ग्रामीण इलाकों में दुकानों पर इनकी उपलब्धता न होने से महिलाओं की पहुंच न होना सबसे बड़ी चुनौती है।

क्लिनिकल ट्रायल में महिलाओं की कम भागीदारी: महिलाओं से संबंधित नवाचारों की सफलता के लिए उन पर रिसर्च और प्रयोग की बेहद आवश्यकता होती है जिसमें महिलाओं की भागीदारी आवश्यक है, लेकिन पूर्वाग्रह के चलते महिलाएं इस में सहयोग नहीं देती और गंभीर बीमारियों में ठोस परिणाम प्राप्त नहीं हो पाते।

सामाजिक एवं सांस्कृतिक बाधाएं: विकासशील देशों में सामाजिक पर सांस्कृतिक बंधनों के कारण, महिला स्वास्थ्य और मासिक धर्म पर खुलकर बात नहीं होना, इस दिशा में हरित नवाचारों की राह में बहुत बड़ी बाधा है।

अनुसंधान में निवेश की कमी: महिला स्वास्थ्य से जुड़े इको फ्रेंडली उत्पादों के रिसर्च के लिए पर्याप्त स्टार्टअप निवेश और सरकारी प्रोत्साहन की कमी होना हरित नवाचार में प्रगति के कार्य में बाधा बनता है।

(७) भविष्य की आशाएं: वर्तमान युग महिला सशक्तिकरण की दिशा में सबसे आशाजनक युग कहा जा सकता है। इस सशक्तिकरण का सबसे मजबूत आधार महिलाओं का स्वास्थ्य ही है, क्योंकि अस्वस्थ महिला कभी भी परिवार, समाज और देश के विकास में सार्थक योगदान नहीं दे सकती। इस तथ्य को विश्व स्तर पर समझा गया है और महिला स्वास्थ्य में हरित नवाचार पर न सिर्फ भारत में बल्कि विश्व के सभी विकसित देशों ने निवेश करना शुरू कर दिया है।

यह निवेश वास्तव में विश्व के सुरक्षित भविष्य में निवेश है क्योंकि स्वस्थ महिला ही स्वस्थ पीढ़ियों का निर्माण कर भविष्य को सुरक्षित करती है। इस दिशा में आधारभूत कार्य शुरू हो गया है। महिलाओं को केंद्र में रखकर स्वास्थ्य नीतियां बन रही हैं, उनकी विशेष स्वास्थ्य आवश्यकताओं पर अनुसंधान में बड़ी कंपनियां निवेश कर रही हैं, महिला स्वास्थ्य में हरित नवाचारों के लिए युवा वैज्ञानिक, जिनमें अधिकतर महिलाएं हैं, स्टार्टअप शुरू कर रहे हैं.... और सबसे आशाजनक तथ्य यह है कि विकासशील और ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं तक जैविक उत्पादों की पहुंच बढ़ाने के लिए उनकी कीमतों को निचले स्तर तक लाने पर सहमति व्यक्त की जा रही है। महिला अस्पतालों के बुनियादी ढांचे को भी अब ग्रीन बनाया जा रहा है और महिलाओं को नई तकनीक से जोड़ने और डिजिटल स्वास्थ्य के लाभ दिलाने के लिए सरकारी और गैर सरकारी संगठन मिलकर जागरूकता अभियान चला रहे हैं।

नवीनतम आंकड़ों के अनुसार महिला स्वास्थ्य में हरित नवाचार की दृष्टि से वर्ष २०२६ आदर्श वर्ष साबित होने जा रहा है, क्योंकि इस दिशा में सबसे अधिक निवेश इसी वर्ष में देखा गया है। यह कहना अतिशयोक्ति पूर्ण नहीं है कि महिला स्वास्थ्य में हरित नवाचार का भविष्य उज्ज्वल है।

महिलाओं के स्वास्थ्य की सुरक्षा सीधे-सीधे प्रकृति की सुरक्षा से जुड़ी है और इस पुनीत कार्य में हम सबको मिलकर भागीदारी निभानी चाहिए। जन सामान्य, सरकार और गैर सरकारी संगठन मिलकर महिलाओं के स्वास्थ्य को बेहतर बनाने के लिए किए जाने वाले नवाचारों में भागीदारी निभा सकते हैं। महिलाओं के प्रति संवेदनशीलता और उनकी सुरक्षा का भाव हम सब की जिम्मेदारी है, और यह भाव हम सभी में जागृत होना चाहिए, तभी हरित नवाचार महिलाओं के स्वास्थ्य को बेहतर बनाने की दिशा में सार्थक कार्य कर पाएंगे।

पूनम रौतेला

प्रधानाचार्य, सोशल एक्टिविस्ट, झालावाड़



Vigyan Setu Foundation

Every article you read here is free. Every young mind we reach has no paywall.
Your support keeps science readily accessible to all.

♦ DONATE NOW — Even ₹100 Makes a Difference ♦



VOLUNTEER | DONATE | EMPOWER CHANGE